माधवस्य प्रियम् अङ्गम्

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» कहानी का परिचय – माधव का स्वप्न

» अङ्गों का संवाद – हस्तः, पादः, नयनम्, कर्णः

» मुखम् और उदरम् का दावा तथा माधव का निर्णय

» शब्दार्थाः – पाठ की शब्दावली

» शरीराङ्गों के नाम – योग्यताविस्तरः शब्दावली

» अभ्यासः – अङ्ग एवं कार्य का मिलान

» मधुराष्टकम् – श्री वल्लभाचार्य कृत स्तोत्र

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. माधव ने सपने में क्या देखा, और उसके अङ्ग आपस में क्या कर रहे थे?

› पाठ से जानकारी लें: 'सः स्वप्ने स्वशरीरस्य अङ्गानि दृष्टवान्' – माधव ने सपने में अपने शरीर के अङ्गों को देखा।

› 'तानि परस्परं चर्चां कुर्वन्ति स्म' – वे अङ्ग आपस में चर्चा/बहस कर रहे थे।

› आगे यह स्पष्ट होता है कि यह चर्चा इस विषय पर थी कि इनमें सबसे श्रेष्ठ (सबसे महत्वपूर्ण) अङ्ग कौन है।

उत्तर – माधव ने सपने में देखा कि उसके शरीर के सभी अङ्ग आपस में इस बात पर बहस कर रहे थे कि उनमें से सबसे श्रेष्ठ अङ्ग कौन है, क्योंकि हर अङ्ग खुद को माधव के लिए सबसे उपयोगी मानता था।

उदाहरण 2. हस्तः और नयनम् में से हर एक ने अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए क्या तर्क (argument) दिया – तुलना कीजिए।

› हस्तः का तर्क: 'मम कारणेन माधवः लिखति, गृहकार्यं करोति, वस्तूनि आनयति' – यानी लिखना, गृहकार्य करना और चीज़ें लाना हाथ के कारण संभव है।

› नयनम् का तर्क: 'मां विना माधवः किमपि द्रष्टुं शक्नोति किम्?' – यानी बिना आँख के माधव कुछ भी नहीं देख सकता।

› दोनों तर्क सही हैं, पर अलग-अलग क्षेत्रों (लिखना/लाना बनाम देखना) में – इससे स्पष्ट है कि हर अङ्ग की भूमिका अद्वितीय (unique) है, किसी एक की तुलना दूसरे से नहीं हो सकती।

उत्तर – हस्तः लिखने, गृहकार्य करने और वस्तुएँ लाने का तर्क देता है, जबकि नयनम् देखने की क्षमता का तर्क देता है – दोनों अलग-अलग परंतु समान रूप से महत्वपूर्ण कार्य हैं, इसलिए किसी एक को श्रेष्ठ नहीं ठहराया जा सकता।

उदाहरण 3. उदरम् बहस को कैसे सुलझाने का सुझाव देता है, और माधव का अंतिम उत्तर क्या होता है?

› उदरम् कहता है – 'वयं सर्वे माधवम् एव पृच्छाम, कः श्रेष्ठः' – सब मिलकर माधव से ही पूछते हैं कि श्रेष्ठ कौन है, ताकि बहस खत्म हो।

› माधव विचार करता है और अपने हर अङ्ग के कार्य को गिनाता है – देखना (नयन), सुनना (कर्ण), बोलना-खाना (मुख), शक्ति पाना (उदर), चलना (पाद)।

› इस विश्लेषण के आधार पर माधव निष्कर्ष निकालता है कि हर अङ्ग अपने काम में अनिवार्य (essential) है, इसलिए तुलना व्यर्थ है।

उत्तर – उदरम् बहस को माधव के निर्णय पर छोड़ने का सुझाव देता है, और माधव उत्तर देता है – 'भवन्तः सर्वेऽपि श्रेष्ठाः, भवन्तः सर्वेऽपि मम प्रियाः' – यानी सभी अङ्ग समान रूप से श्रेष्ठ और प्रिय हैं।

उदाहरण 4. 'माधवः विचारयति बोधयति च' वाक्य का हिन्दी और अंग्रेज़ी में अर्थ लिखिए और बताइए कि यह दो अलग-अलग क्रियाएँ क्यों हैं।

› 'माधवः' = माधव – कर्ता।

› 'विचारयति' = विचार करता है (thinks) – यह पहली क्रिया है, माधव मन में सोचता है।

› 'बोधयति' = समझाता है (advises/explains) – यह दूसरी क्रिया है, माधव अपने अङ्गों को अपना निष्कर्ष बताता है।

उत्तर – हिन्दी: माधव विचार करता है और (फिर) समझाता है। English: Madhava thinks and (then) explains. दोनों क्रियाएँ अलग हैं क्योंकि पहले वह मन में सोचता है, फिर अपना निर्णय दूसरों (अङ्गों) को बताता है।

उदाहरण 5. हाथ से जुड़े पाँच अङ्गों के संस्कृत नाम क्रम में (कंधे से उंगली तक) लिखिए।

› सबसे ऊपर कंधा – स्कन्धः।

› फिर बाँह – भुजः, फिर कोहनी – कूर्परः/कफोणिः।

› फिर कलाई – मणिबन्धः, और अंत में हाथ व उंगलियाँ – हस्तः, अङ्गुल्यः।

उत्तर – क्रम है: स्कन्धः (कंधा) भुजः (बाँह) कूर्परः (कोहनी) मणिबन्धः (कलाई) हस्तः (हाथ) अङ्गुल्यः (उंगलियाँ)।

उदाहरण 6. 'अहं नासिकया श्वासं स्वीकरोमि' – यह वाक्य शुद्धम् है या अशुद्धम्? कारण सहित बताइए।

› वाक्य में अङ्ग है 'नासिका' (नाक) और क्रिया है 'श्वासं स्वीकरोमि' (साँस लेता हूँ)।

› वास्तविक जीवन में साँस लेने का काम नाक (और फेफड़ों) से होता है, यह नाक का प्राकृतिक कार्य है।

› इसलिए अङ्ग और कार्य के बीच सही संबंध है।

उत्तर – यह वाक्य शुद्धम् है, क्योंकि नासिका (नाक) से श्वास लेना उसका स्वाभाविक और सही कार्य है।

उदाहरण 7. मधुराष्टकम् के पहले श्लोक में शरीर के कौन-कौन से अङ्गों/भावों को 'मधुर' कहा गया है, सूची बनाइए।

› श्लोक को ध्यान से पढ़ें: 'अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्। हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥'

› हर 'मधुरम्' से पहले वाला शब्द एक अङ्ग/भाव है – अधरम् (होंठ), वदनम् (मुख), नयनम् (आँख), हसितम् (हँसी), हृदयम् (हृदय), गमनम् (चाल)।

› इस तरह छह चीज़ों की सूची बनती है – सभी को समान रूप से मधुर कहा गया है, कोई तुलना नहीं की गई।

उत्तर – पहले श्लोक में अधरम् (होंठ), वदनम् (मुख), नयनम् (आँख), हसितम् (हँसी), हृदयम् (हृदय), और गमनम् (चाल) – इन छह अङ्गों/भावों को 'मधुर' कहा गया है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• 'माधवः किं दृष्टवान्?' जैसे प्रश्नों में हमेशा 'स्वप्ने' शब्द का उल्लेख करना न भूलें, क्योंकि यही कहानी की मूल सेटिंग है।

• परीक्षा में 'कः किम् वदति' प्रकार के प्रश्नों में अङ्ग का नाम और उसके कथन को सही जोड़ी में याद रखें – गड़बड़ी से बचने के लिए हर अङ्ग की एक कीवर्ड-पहचान बना लें।

• पाठ के सार/निष्कर्ष (moral) पर आधारित प्रश्नों में हमेशा माधव के अंतिम वाक्य को उद्धृत करें – यह उत्तर को पूर्ण और सटीक बनाता है।

• शब्दार्थ की तालिका को क्रम से याद करने के बजाय, हर शब्द को कहानी के किसी दृश्य से जोड़कर याद करें – इससे अर्थ जल्दी और लंबे समय तक याद रहता है।

• चित्र देखकर अङ्ग का नाम लिखने वाले प्रश्नों (चित्रं दृष्ट्वा अङ्गस्य नाम लिखन्तु) के लिए हर अङ्ग की सही वर्तनी याद रखें, विशेषकर 'ऋ' और 'ू' की मात्रा वाले शब्द (कूर्परः, ऊरुः) में सावधानी बरतें।

• संख्या वाले रिक्त-स्थान प्रश्नों (जैसे दाँतों/उंगलियों की संख्या) में सही संख्या शब्द (द्वात्रिंशत्=बत्तीस दाँत, दश=दस उंगलियाँ) याद रखना ज़रूरी है – ये अक्सर परीक्षा में पूछे जाते हैं।

• स्तोत्र के रचयिता का नाम (श्री वल्लभाचार्य) और शीर्षक का अर्थ (मधुर + अष्टकम्) परीक्षा में सामान्यतः पूछे जाने वाले प्रश्न हैं – इन्हें ठीक से याद रखें।

एक नज़र में रिवीज़न

› याद रखें: यह पूरी कहानी माधव का 'स्वप्नम्' (सपना) है, वास्तविक घटना नहीं – यह परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है।

› हर अङ्ग का तर्क याद रखने के लिए उसके मुख्य कार्य से जोड़ें – हस्त=लिखना, पाद=चलना, नयन=देखना, कर्ण=सुनना।

› पाठ की सबसे महत्वपूर्ण पंक्ति याद रखें – 'भवन्तः सर्वेऽपि श्रेष्ठाः। भवन्तः सर्वेऽपि मम प्रियाः।'

› 'विचारयति' (सोचना) और 'बोधयति' (समझाना) के अंतर को हमेशा याद रखें – यह परीक्षा में प्रायः पूछा जाता है।

› शरीराङ्गों को हमेशा चार समूहों (सिर/धड़/हाथ/पैर) में बाँटकर याद करें, इससे भूलने की संभावना कम होती है।

› हर अभ्यास हल करने से पहले खुद से पूछें – 'क्या यह अङ्ग वास्तव में यह काम करता है?' – यही तार्किक जाँच शुद्ध/अशुद्ध पहचानने की कुंजी है।

› मधुराष्टकम् का पहला श्लोक और उसकी लयबद्ध संरचना (हर पंक्ति में 'मधुरम्' की पुनरावृत्ति) याद रखें।